

(९) 'अद्य नो देव सवितः०' (—सामवेद १४१)—

यह मन्त्र दुःस्वप्नोंका नाश करनेवाला है।

(१०) 'ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो

निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो

याति भुवनानि पश्यन्॥'

(—ऋग्वेद १। ३५। २, यजु० ३३। ४३)

—यह मन्त्र सभी प्रकारकी कामनाओंकी पूर्ति करनेवाला है। प्रतिदिन प्रातःकाल इस मन्त्रका कम-से-कम सात हजार जप करना चाहिये।

भगवान् सूर्यसे सम्बद्ध मन्त्रोंमें अधोलिखित मन्त्र सभी प्रकारके नेत्ररोगोंको यथाशीघ्र समाप्त करनेवाला अनुभूत मन्त्र है। (मैंने जीवनमें कई बार इस मन्त्रसे आश्चर्यजनक सफलता अर्जित की है।) यह पाठमात्रसे सिद्ध होनेवाला है। इसे 'चाक्षुषोपनिषद्' के नामसे भी जाना जाता है तथा इसका वर्णन कृष्णयजुर्वेदमें मिलता है।

'अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, चक्षुरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।'

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहं अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय।

कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति\*।

इस प्रकार उपरिनिर्दिष्ट सम्पूर्ण विवेचनके आकलनसे यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि भगवान् सूर्यकी उपासना मानवमात्रके लिये नितान्त वाञ्छनीय है। सूर्योपासनासे दिव्य आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, धन, पशु, मित्र, पुत्र, स्त्री, अनेक इच्छित भोग तथा स्वर्ग ही नहीं, मोक्षतक भी अनायास सुलभ हो जाता है। अतः प्रत्येक नैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक अभ्युत्थानके इच्छुक व्यक्तिको विशेषतः आरोग्यके इच्छुक व्यक्तिको—सद्यः फलप्रदाता भगवान् भास्करकी उपासना करके अपना जीवन सफल बनाना चाहिये। यह प्रसिद्ध भी है कि 'आरोग्यं भास्करादिच्छेत्'।